विषय

Sr. No.	विषय की श्रेणियाँ	[illegible]	पृष्ठ No.
१	समकालीन हिन्दी साहित्य में चर्चित विमर्श	डॉ. [illegible]	१
२	चर्चित साहित्य की मूल संवेदना	डॉ. [illegible]	७
३	आधुनिक हिन्दी कविता में दलित चेतना	डॉ. [illegible]	९
४	समकालीन हिन्दी साहित्य में चर्चित विमर्श (भूमंडलीकरण, उदारीकरण, बाजारीकरण की समस्या और उनकी तथा अन्य चर्चित विमर्श)	डॉ. [illegible]	१३
५	समकालीन हिन्दी साहित्य में दलित विमर्श	डॉ. [illegible]	१८
६	समकालीन हिन्दी साहित्य में चर्चित स्त्रीवाद का विमर्श, अपने अपने पिंजरे के परिप्रेक्ष्य में	डॉ. [illegible]	२६
७	दलित साहित्य के दृष्टिगत आलोचना की अभिव्यक्ति आलोचना	डॉ. [illegible]	३२
८	'कृतज्ञ' से विचित कृतज्ञ	डॉ. [illegible]	३८
९	समकालीन दलित महाजनों में स्त्री विमर्श	डॉ. [illegible]	३९
१०	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श (रमणिका गुप्ता के 'गोमड़ के आदमखोर' उपन्यास के विशेष संदर्भ में)	डॉ. [illegible]	४६
११	हिन्दी साहित्य में आदिवासी विमर्श	डॉ. [illegible]	५०
१२	महिला उपन्यासकार और स्त्री विमर्श	डॉ. [illegible]	५५
१३	इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक के हिन्दी आदिवासी उपन्यास और स्त्री विमर्श	डॉ. [illegible]	५८
१४	दलित नारी : दशा, दिशा	डॉ. [illegible]	७०
१५	हिन्दी दलित कविता विमर्श	डॉ. [illegible]	७६
१६	समकालीन हिन्दी कविता	डॉ. [illegible]	७९

समकालीन हिंदी कविता

डॉ. दत्ता शिवराम साळोखे
हिंदी विभाग, [illegible] कॉलेज, कळंबा, जि. उस्मानाबाद

--------- (16) ---------

समकालीन कविता युगीन यथार्थ वास्तविकता को अभिव्यक्ति प्रदान करती है। यह काव्यांदोलन, अपनी ऐतिहासिकता में सामाजिक युग के जटिलताओं, अंतर्द्वंद्वों, विसंगतियों, विषमताओं एवं विडंबनाओं का खुला हस्ताक्षर है। समकालीन कविता में मूल्यवत्ता के प्रति खतरे को उठा पाने का अपूर्व साहस है। इसी कारण उन्होंने अपने अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य पर लादकर इसे लगाये गये प्रत्येक अंकुश और वैचारिक पराधीनता के समर्थनवादी तकाजों को पीछे छोड़ दिया है।

साहित्य के क्षेत्र में समकालीन शब्द को सार्थक प्रयोग के अभाव में प्रायः कभी-कभी बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ जाता है। वस्तुतः अर्थ विज्ञान के अनुसार प्रत्येक शब्द का अर्थ होता है, किंतु वह अर्थ सर्वदा एक नहीं रहता। उसमें परिवर्तन होता रहता है। अर्थ परिवर्तन को अर्थ-विकास भी कहा जाता है। पहले सीमित अर्थ में समकालीन शब्द का प्रयोग सामयिक तुलना में होता था, यानी जो एक ही समय में हुए हो। बाद में इस शब्द का प्रयोग वर्तमान के लिए किया जाने लगा। जो वर्तमान संदर्भ में मौजूद और सार्थक होता है, वह समकालीन इस दृष्टि से विचारणीय देखा जाए तो प्रत्येक युग का साहित्य अपने समय में समकालीन होता है और उसके समकालीन होना उसकी श्रेष्ठता की पहली शर्त है। ऐसा साहित्य जो युग को चित्रित करे समकालीन साहित्य है। युगीन होना काव्य के लिए कम महत्त्व की बात नहीं है, परंतु आज समकालीन का अर्थ युगीन संदर्भ से जोड़ा है। केवल युग में जीना ही समकालीन होना नहीं है। समकालीन बोध के लिए युग के प्रति पूर्ण सचेत होना व युग को गहराई से महसूस करना जरूरी है।

समकालीनता मनुष्य को उसके समूचे परिवेश के बीच ठीक-ठीक पहचानती है, एक सच्ची आलोचनात्मक दृष्टि से देखती है और व्याख्या करती है। यही कारण है कि समकालीन कवि अपने समय की विसंगति, विडंबना और तनावों को प्रकट कर कष्ट और शोषण के वास्तविक रूप और अनेक कारण को पहचान लेता है। वह समय की चुनौतियों को स्वीकार कर सत्य को ग्रहण करने की एक यथार्थवादी दृष्टि अपनाता है। वह युग की धड़कनों से सीधा साक्षात्कार करते हुए बदलते हुए संदर्भों को ग्रहण करते हुए सर्वसमावेशकता का अन्वेषण करता है। वह किसी अद्भुत या कल्पना लोक में न उड़कर धरती पर विचरण करता है। उसका संदर्भ साधारण जन के लिए होता है। इसके लिए समकालीनता भारतीय जन की मुक्ति की आकांक्षा है और वह मुक्ति के लिए संघर्ष के जन सत्ता की सत्ता के लिए प्रयासरत है। डॉ. परमानंद श्रीवास्तव ने समकालीन कविता को व्यापक अर्थ देते हुए निष्कर्ष है कि समकालीन कविता कहते है हमारे समय के महत्वपूर्ण सरोकारों, सवालों से टकराती एक विशेष रूप और गुणधर्म वाली कविता का चित्र सामने आ जाती है। समकालीन कविता चाहे प्रेम की हो या राजनीतिक स्थिति या मानवीय संकट की- इतना निश्चित है कि एक गाढ़ा गहन की संवेदना इसके चित्रण के ढंग को ही नहीं अनुभव के रूप अथवा प्रकृति को भी करती है। वस्तुतः समकालीन का एक व्यापक संदर्भ में देखा जा सकता है, जिसके स्रोत अपने परिवेश की सच्चाईयों के भीतर रहते हैं। कविता में समकालीनता यही पता होती है, जहाँ जन मुक्ति की आकांक्षा को लेकर कवि की संवेदना और विचार कलात्मक तेवर के साथ मौजूदा सामाजिक सरोकार के संदर्भ में अपना आकार देखते हुए वर्तमान को व्यक्त कर पाते है।

समकालीन हिंदी कविता सन १९६० के बाद पैदा हुई कोई आकस्मिक कविता नहीं है, बल्कि वह एक लंबी विकास प्रक्रिया का परिणाम है। समकालीन हिंदी कविता के रूप में आज जिस कविता की पहचान की जा सकती है, उसे अपना स्वरूप प्राप्त करने

तथा विकास करने के लिए लंबा संघर्ष करना पड़ा है। ऐतिहासिक संदर्भ में तलाशकर यदि इसके मूल को देखें तो इसकी व्यापकता शुरुआत हिंदी काव्येतिहास में छायावाद के बाद शुरु हुए प्रगतिवादी आंदोलन से होती है। प्रगतिवाद का महत्व इस बात में है कि यह आंदोलन यथार्थवादी चेतन को लेकर शुरु हुआ और समकालीन हिंदी कविता यथार्थ चेतना का ही विकास है। आठवें दशक से लेकर नयी सदी की शुरुवात का वह काव्य समय है, जबकि ताजी, कच्ची संवेदना और परिपक्व भाव प्रणाली एक मौजूद है और इस नाते यह समय कवि की समृध्दि का समय भी है। समकालीन हिंदी कविता में सामाजिक यथार्थबोध अधिक व्यावहारिक हो रहा है और सोच के कितावीपन की तुलना में अनुभव की जीवंतता को प्रमुखता दी जा रही है। वस्तुतः सच्ची कविता मनुष्य को केंद्र में रखकर अपने युग के सार्थक और भविष्योन्मुखी तत्वों को लेकर ही गतिशील होती है। आज की हिंदी कविताओं ने अपने इस दायित्व को पहचाना है और उसको वहन करने में वे सक्रिय हैं। अरुण कमल के काव्य संग्रह अपनी केवल धारा की यह पंक्तियाँ कविता केंद्र में मनुष्य को रखने पर जोर देती है।

जो आदमी को प्यार नहीं करते
उनकी कोई गंगा नहीं
कोई मातृभूमि नहीं
कोई अपना तारा नहीं।

समकालीन कविता स्वयं गत्यात्मक यथार्थ का प्रतिबिंबन है, जहाँ आत्मपरक, निजी अनुभूति केवलकर न होकर सार्वजनीक भावों की अभिव्यक्ति की प्रमुखता दी जाती है। कुमार विकल की जनतंत्र और मैं की अनुभूति अभिव्यक्ति-यथार्थ कलात्मक प्रतिबिंबन में मानक अंश इसीलिए बन सकती है कि उसमें कवि की स्थिति किसी भी आम भारतीय जन से अलग नहीं है.....

मैं भी कितना भोला हूँ कि हर पाँचवे साल
एक परची देकर बदला लिया जाता हूँ
और वह परची मेरे पाँव से दिल्ली पहुँच जाती है
जो कालांतर में मुझसे बहुत दूर चली जाती है

और मैं पीछे.....

ब्रेख्त के विचारानुसार भी साहित्यिक रचनाओं पर फैक्टरियों की तरह कब्जा नहीं किया जा सकता, अभिव्यक्ति के साहित्यिक रूपों को पेंटेंटों की तरह अधिकार में नहीं लिया जा सकता : रचना का यथार्थवादी विधि पर भी यथार्थवादी को छोटी से छोटी बारीकी चित्रित करने की छाप अंकित है. . . जिससे यह भी पता लगता है कि वह चित्रण किसे युग और किस वर्ग द्वारा किया गया। लोग संघर्ष कर रहे हैं और हमारी आँखों के सामने यथार्थ बदल रहे हैं, हमें किन्हीं खास मौजूद रचनाओं में से यथार्थवाद को नहीं निचोडन चाहिए, अपितु हमें कला अथवा दूसरे स्त्रोतों से हासिल हुए नये और पुराने, पर परखे अथवा उनके प्रत्येक साधन का उपयोग करना चाहिए ताकि यथार्थ को एक ऐसी शैली में चित्रित किया जा सके जे कि संघर्षरत मानव को पहुँच के भीतर हो। आवश्यक नहीं है कि यथार्थ का कलात्मक प्रतिबिंब मार्क्सवादी सौंदर्यशास्त्र से प्रभावित या प्रतिबध्द रचनाकार हो को - यह कलागत विशेषता किसी भी सृजनशील जागरुक आत्मचेतस् कवि की विशेषता हो सकती है। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की रचनाओं में भी यथार्थ के कलात्मक प्रतिबिंबन न संप्रेषणीयता की विशेषता द्रष्टव्य है... जिसमें आम आदमी की जीवन संघर्षी जिजीविषा व क्रांति चेतना अपने संपूर्ण रागात्मक बोध में द्रष्टव्य है ... यथा...

Scanned with OKEN Scanner